षष्ठ प्रश्न खण्ड-(क) "ताज" — सुमित्रानन्दन पंत — भावार्थ

"छायावाद" के चार स्तंभ कवियों में जहाँ जयशंकर प्रसाद प्राचीन भारतीय इतिहास के गौरव गायक कवि के रूप में पहचाने जाते हैं, वहीं सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' क्रांति, पौरुष और कवि के रूप में एवं जहाँ महादेवी वर्मा करुणा, वेदना तथा रहस्यवाद की अमर गायिका मानी जाती हैं, वहीं सुमित्रानन्दन 'पंत' प्रकृति के 'सुकुमार कवि' एवं कोमल भावनाओं के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

'छायावादी' सुकुमार कवि 'पंत' का काव्य विकास की ओर अग्रसर रहा है। वे 'छायावाद' से 'प्रगतिवाद' और प्रगतिवाद से 'प्रयोगवाद' की ओर अग्रसर रहे हैं, इसी प्रगतिवादी विचार धाराओं पर आधारित कविता है — 'ताज'।

'ताज' को देखने की सभी साहित्य मनीषियों की अपनी दृष्टि रही है। जहाँ किसी ने कहा "अहा! ताज प्रकृति की अनोखी रचना।" पर्यटक 'ताज' को देखकर भवन निर्माण की इस बेजोड़ कला पर रीझ जाते हैं, वहीं हमारे सौंदर्य प्रेमी कवि सुमित्रानन्दन 'पंत' ने कहा —

"हाय! मृत्यु का ऐसा अमर, अपार्थिव पूजन ?
जब विषण्ण, निर्जीव पड़ा हो जग का जीवन!
संग-सौध में हो शृंगार मरण का शोभन,
नग्न, क्षुधातुर, वास विहीन रहें जीवित जन ?

यहाँ पर कवि की मानवतावादी दृष्टि

दिखलायी पड़ती है। ताजमहल, भले ही अनुपम रचना है, जिसका सौंदर्य अप्रतिम है। भले ही यह प्रेम की निशानी है। लेकिन यह शवों की पूजा है। अतीत की पूजा है। जो बीत गया उसकी पूजा है। अपार्थिव की पूजा क्या उचित है, जबकि जगत में जीवित व्यक्ति क्षुधातुर, अभावग्रस्त, आवासविहीन, नग्न हो। ताजमहल शव को सुसज्जित करने का आयोजन मात्र है, न जाने कितने मजदूरों के खून-पसीने की कमाई का प्रतीक है यह इस 'ताज' का निर्माण करके कितने गरीबों की मुहब्बत का मजाक उड़ाया गया है।

प्रस्तुत कविता में कवि ने माना है, कि ताज का निर्माण आत्मा का अपमान और प्रेत तथा उसकी छाया से रति (प्रेम) करना है। क्या यही प्रेम की अर्चना है, कि हम मरण का वरण और कंकालों को स्थापित करके जीवन (संसार) का प्रांगण भर दें। यथा —

"मानव! ऐसी भी विरक्ति क्या जीवन के प्रति?
आत्मा का अपमान, प्रेत और छाया से रति!!"
— — — — — —
स्थापित कर कंकाल, भरे जग का प्रांगण?

कवि का मानना है, कि 'ताज' बीते हुये युग के मृत आदर्शों की सुन्दर रचना जिसमें मानव का मोहांध हृदय में घर कर गया किन्तु यह है क्या

यथा — "शव को दें हम रंग, आदर मानव का
मानव को हम कुत्सित चित्र बना दें शव का

कविवर 'पंत' ने 'ताज' के बहाने

जीवित संसार के मानव के कष्ट की ओर एवं उनकी उपेक्षाओं की ओर हमारा ध्यान खींचा है।

कविवर 'पंत' के जीवन एवं चिंतन में परिवर्तनशीलता रही है। आरंभ में वे प्रकृति की सुकुमारता की बात करते हैं, जब 'छायावाद' काल अर्थात् सन् 1918-20 से लेकर 1935 तक का काल रहता है। पुनः, 1935 से 1944-45 से यही 'पंत' प्रगतिशील विचार धारा के कवि रूप में अपने को बदल देते हैं - यह समय की परिवर्तनशीलता की मांग भी है।

ताजमहल के प्रति कवि के असीम आक्रोश का कारण उस समय का करुण-प्लावित हृदय है, जो उसे आगे चलकर प्रगतिवादी बना देता है।

"हाय" शब्द का प्रयोग कवि के हृदय के अनन्त विषाद को मूर्त करता है, जैसे —

"प्रेम अर्चना यहीं करें, हम मरण को वरण?
स्थापित कर कंकाल, भरें जीवन का प्रांगण?"

कवि का मानना है, कि मृतकों के प्रति ऐसा मोह कि हम उनके लिए 'ताजमहल' का निर्माण कर दें, ऐसा मोहान्ध मृतकों के प्रति और जीवितों के प्रति इनकी घृणा कि उन्हें जीवित में ही मृतक के समान जीने के लिए मजबूर कर दें। कवि ने उपासना के रूप सत्य को एक सिद्धांत की याद दिलायी है, हम जिसको भूलते हैं, हम उन्हीं को प है (गीता का संदेश)।

अतः, कवि कहता है कि "हम जीवन के अमर संदेश को भूल गये हैं मृतक की उपासना हमें मृतक बनाता है

Achievers

ईश्वर की प्राप्ति होती है
और जीवितों को सँवारने से

यथा —
"भूल गये हम जीवन का संदेश अनश्वर
मृतकों के हैं मृतक, जीवितों का है ईश्वर।"

जीवितों का है ईश्वर, इससे कवि का ईश्वर के प्रति गहनतम आस्था प्रकट होती है। इसप्रकार, स्पष्ट होता है, कि ताज के प्रति कवि का विद्रोह पूँजीवाद के विरुद्ध गंभीर आक्रोश है।

भाषा — खड़ी बोली हिन्दी एवं ओजस्वी
रस — करुण के साथ वीर
पद — गेय
अलंकार — अनुप्रास आदि।

12/04/2020
प्रो० डॉ० नीलू कुमारी
प्रभारी प्रधानाचार्य,
बी०एन० कॉलेज, भागलपुर
ति० मॉ० भा० विश्वविद्यालय, भागलपुर।